Journal Global Values, Vol. XV, No. Special Issue 2024, ISSN: (P) 0976-9447, (e) 2454-8391, Impact Factor 8.888(SJIF)
https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.014

पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी

डॉ0 अन्नू महाजन
असिस्टेंट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
वी.आर.ए.एल., महिला महाविद्यालय, बरेली, उ0प्र0
निकिता प्रजापति

सारांश:

भारत में प्राचीन समय से लेकर अब तक पर्यावरण को संरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। आज तरह–तरह की गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे –ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत क्षरण, बाढ़ सूखा, जल प्रदूषण वायु, प्रदूषण इत्यादि गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो चुकी हैं जिनका निवारण करना अति आवश्यक है। सरकार इन समस्याओं के निवारण के लिए निरंतर प्रयास कर रही है, इस दिशा में अनेक नीतियाँ, नियम, कानून, प्रयास की ओर अग्रसर हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति हर व्यक्ति को अब जागरूक होने की जरूरत है और इसके संरक्षण में अपनी–अपनी भूमिका निभानी है। एक स्वच्छ और स्वस्थ जीवन तभी संभव है जब हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहेगा। अतः इसका संरक्षण करना हर एक नागरिक का प्रथम कर्तव्य होना चाहिए ताकि एक बेहतर भविष्य व जीवन की कल्पना की जा सके।

मुख्य शब्द:

पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण सुरक्षा, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण प्रबंधन, पृथ्वी, पर्यावरण, असंतुलन, पृथ्वी सुरक्षा, प्रदूषण प्रभाव, पर्यावरण नीति।

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ0 अन्नू महाजन
निकिता प्रजापति

पर्यावरण संरक्षण हमारी जिम्मेदारी

Vol. XV, Sp. Issue
Article No. 14,
pp. 101-108

Online available at https://anubooks.com/journal/journal-globalvalues

DOI: https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.014

परिचय :

भारत में पर्यावरण संरक्षण का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। पर्यावरण का अध्ययन प्राचीन काल से ही होता रहा है। हड़प्पा सभ्यता हो या वैदिक संस्कृति हर जगह पर्यावरण संरक्षण के साक्ष्य मिलते हैं। भारतीय ऋषि मुनियों ने समस्त प्रकृति व प्राकृतिक शक्तियों को देवता के समान माना है। वेदों, उपनिषदों व पुराणों में पर्यावरण के विभिन्न घटकों का वर्णन किया है। मानव व पर्यावरण के आदर्श संबंध की व्याख्या वेदों में किया गया है। वेदों में पाँच तत्वों–भूमि, जल, अग्नि(ऊर्जा), वायु तथा आकाश के आपस में मिलन से जीवन की कल्पना की गयी है। मृत्यु के बाद जीवों को नष्ट होकर पुनः पाँच तत्वों में विलीन होने की बात कही गई है। ऊर्जा के स्त्रोत 'सूर्य' को देवता माना गया है। जल को देवता कहा गया है। नदियों को जीवन दायिनी कहा गया है, यद्यपि प्राचीन भारतीय संस्कृतियाँ नदियों के किनारे शुरू हुई व विकसित हुई। भारतीय संस्कृति में आम, कदली, वट, पीपल, तुलसी इत्यादि पेड़–पौधों की पूजा की जाती रही है।

मध्यकालीन एवं मुगलकालीन भारत में भी पर्यावरण के प्रति स्नेह व लगाव रहा है। अंग्रेजों ने स्वंय के आर्थिक लाभ के कारण पर्यावरण को हानि पहुँचाना आरम्भ किया। विनाशकारी दोहन नीति के परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन अंग्रेजों के समय ही स्पष्ट होने लगे थे। स्वतंत्र भारत में औद्योगिकीकरण पश्चिमी देशों का प्रभाव व जनसंख्या विस्फोट के कारण भारत में विभिन्न प्रकार के प्रदुषणों की शुरूआत हुई। पूरी दुनिया में स्थापित कारखानों से निकलने वाले ग्रीन हाउस गैसों जैसे – कार्बन मोनो आक्साइड, कार्बन डाईआक्साइड, मीथेन आदि ने ना केवल गाँवों शहरों के वातावरण को दूषित किया है बल्कि ओजोन मण्डल को भी बहुत हानि पहुँचाई है जिसकी वजह से सूर्य की अल्ट्रा वायलेट किरणों का खतरनाक प्रभाव बढ़ गया है और ग्लोबल वार्मिंग की वजह से ध्रुवों पर जमीं बर्फ पिघलने की आशंका बढ़ गयी है। पर्यावरण परिवर्तनशील है इसके भौतिक व सांस्कृतिक तत्व में प्रतिपल परिवर्तन हो रहा है। पर्यावरण में परिवर्तन करने वाले घटकों में पृथ्वी की सौर शक्तियाँ जीव–जन्तु तथा प्रमुख रूप से मानव स्वंय है।

पर्यावरण को जैविक व अजैविक घटक परस्पर प्रभावित करते रहे हैं। पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के काल से ही जीव पर्यावरण को प्रभावित करते आ रहे हैं। मानवों के क्रियाकलाप, तकनीकी कौशल व क्षमता ने पर्यावरण को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है।

प्राकृतिक, नदियों, समुद्रों, घाटियों को मनुष्य ने ठोस अपशिष्टों, जहरीली रसायनों, कूड़ा–करकट इत्यादि से बहुत प्रदूषित कर दिया है। जल प्रदूषण के कारण जलीय जीव–जन्तुओं का जीवन संकट में आ गया है। रासायनिक खादों, उर्वरकों, कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग के कारण कृषि भूमि प्रदूषित हो गई है। रसायनों के उपयोग से सभी कृषि उत्पाद और डेयरी उत्पाद प्रदूषित हो गये हैं। प्रदूषित उत्पादों के उपयोग की वजह से मनुष्य के शरीर में खरतनाक, विषैले रसायनों की मात्रा अत्यधिक बढ़ गई है।

अतः पृथ्वी पर प्रदूषण का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। अब हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति

सचेत व जागरूक होने की आवश्यकता है। यदि पर्यावरण संरक्षण के प्रति विशेष ध्यान न दिया गया तो भविष्य में भंयकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा जो समस्त मानव जाति के लिए अत्यन्त कष्टदायी होगा। अतः पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करना हर एक नागरिक का प्रमुख कर्तव्य होना चाहिए, तभी एक सुखद भविष्य व जीवन की कल्पना करना संभव होगा पृथ्वी पर जीवन यापन सुख पूर्ण और सरल होगा।

पर्यावरण असंतुलन / प्रदूषण / ह्रास के कारक

1. प्राकृतिक कारक
- सूखा
- बाढ़
- मरूस्थलीकरण
- मृदा अपरदन
- भूकंप
- ज्वालामुखी विस्फोट
- चक्रवात व तूफान
- दावाग्नि (वनों में लगने वाली आग)

2. मानवीय कारक
- वन विनाश
- उपभोग वादी संस्कृति
- प्राणी सम्पदा का विनाश
- कृषि
- मृदारेचन
- पशु पालन
- जनसंख्या वृद्धि
- नगरीकरण
- खनन / उत्खनन
- प्रौद्योगिकी विकास

पर्यावरण संरक्षण का महत्व :

● पर्यावरण को सुरक्षित व स्वच्छ रखना हर मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक है, जिससे कि वो एक स्वच्छ और स्वस्थ जीवन–यापन कर सके। पर्यावरण संरक्षित रहेगा तभी जीवन भी सुचारू रूप से चलेगा अन्यथा भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

● पृथ्वी पर तरह–तरह के प्रदूषणों का प्रादुर्भाव हुआ है जो कि पर्यावरण के असंतुलित हो जाने का परिणाम है। पर्यावरण के संरक्षण से इन तमाम प्रकार के प्रदूषणों जैसे– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि को कम किया जा सकता है और पृथ्वी के वातावरण को फिर से पहले की तरह स्वच्छ रखा जा सकता है जो कि पर्यावरण के संरक्षण से ही संभव है।

● पर्यावरण के प्रदूषित हो जाने से पृथ्वी पर पायी जाने वाले कुछ जीव–धारियाँ लुप्तप्राय हो रही है और बायो डायवर्सिटी में असंतुलन हो गया है जिसका कारण पर्यावरण असंतुलन है अतः पर्यावरण संरक्षण से इन समस्याओं को हल किया जा सकता है।

● ग्रीन हाउस गैसों के प्रभाव के कारण पृथ्वी के औसत तापमान में बढ़ोत्तरी हुई है जो मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के परिणाम स्वरूप सूखा, बाढ़, गर्मी आदि के खतरे के स्तर में बढ़ोत्तरी हुई है जो कि मानव जीवन को काफी हद तक प्रभावित कर रहे है, पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत व जागरूक होकर ऐसी समस्याओं से छुटकारा पाना संभव है।

● मीथेन एक शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैस है जो कि पृथ्वी के वातावरण को अधिक नुकसान पहुँचाता है और गर्मी बढ़ाने वाला गैस है, जो कि पर्यावरण प्रदूषण का परिणाम है।

● पृथ्वी पर कई क्षेत्रों में अम्ल वर्षा और त्वचा कैंसर जैसी भयंकर परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं जो कि ओजोन परत के ह्रास का परिणाम हैं, ओजोन परत सूर्य के अल्ट्रा वायलेट किरणों से पृथ्वी पर जीवन यापन करने वालों की रक्षा करता है परन्तु पर्यावरण के प्रदूषित हो जाने से ओजोन परत का काफी क्षरण हुआ है इसलिए ये आवश्यक है कि पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान दिया जाय।

● जब पर्यावरण संरक्षित रहेगा, तभी जीवन भी रहेगा। मानव के निरंतर प्रगति व विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण अति आवश्यक है।

● सभी के स्वास्थ्य, जीवन का अस्तित्व, सतत विकास का महत्वपूर्ण पहलू है–स्वच्छ पर्यावरण। सभी मानव जीव–जन्तु, पानी, हवा, भोजन व अन्य संसाधनों के लिए पर्यावरण पर आश्रित है। अतः पर्यावरण का संरक्षण सभी के लिए बहुत आवश्यक है।

पर्यावरण असुरक्षा के दुष्परिणाम :

पर्यावरण के सभी तत्व परस्पर एक–दूसरे से संबधित हैं, संपूर्ण पृथ्वी एक इकाई है जिस पर एक समान भौतिक नियम कार्य करती है, पर्यावरण के किसी भी एक कारक में जरा–सा परिवर्तन होने पर संपूर्ण पर्यावरण प्रभावित होता है। मानव एवं पर्यावरण के बीच असंतुलन के कारण ही विभिन्न पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। मानव ने स्वंय की सुविधा एवं लालच की वजह से इस संतुलन को असंतुलित किया है। इस असंतुलन के परिणामस्वरूप अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

बारिश की कमी, अत्यधिक असहनीय गर्मी, बाढ़, सूखा, ग्लोबल वार्मिंग जैसी खतरनाक समस्याएँ बढ़ती जा रही है जिनका कारण पर्यावरण असंतुलन व प्रदूषण है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारक इतने अधिक बढ़ गये हैं कि इनसे होने वाले प्रदूषणों में से एक वायु प्रदूषण के हानिकारक वायु को समाहित करने के लिए उचित अनुपात में पेड़–पौधों की कमी है।

वायुमण्डल में विभिन्न प्रकार की नुकसानदायक व खतरनाक गैसों की उपस्थिति और ओजोन गैस की कमी के कारण मानव का स्वास्थ्य खतरे में है।

विभिन्न प्रकार के प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी चिन्ताजनक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं और पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और तरह–तरह की परेशानियां दिख रही हैं।

देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा पर्यावरण पर आश्रित है लेकिन वनों, जंगलों की कटाई ने पर्यावरण पर खतरा ला दिया है। अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में पेड़–पौधों, वनों की कमी से कई तरह के प्रदूषण में वृद्धि हुई है।

https://doi.org/10.31995/jgv.2024.v15iS1.014

पर्यावरण असंतुलन के कारण मानव को कृषि योग्य भूमि, खाद्य उत्पादन में कमी आई है।

पर्यावरण प्रदूषण के परिणामस्वरूप कई तरह के गंभीर रोगों जैसे हृदय रोग, श्वास संबधीं रोग, कैंसर आदि होने की आशंका बढ़ी है।

भारत में पर्यावरण प्रबंधनः

वैसे तो भारत में पर्यावरण प्रबंधन की शुरूआत वैदिक काल से हुई लेकिन पर्यावरणीय नवचेतना का प्रारम्भ सन् 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से आयोजित स्टॉकहोम सम्मेलन के बाद हुआ। इस सम्मेलन में पर्यावरण संरक्षण एवं सुधार हेतु कई निर्णय और योजनाएँ तैयार की गई।

- भारत सरकार ने सन् 1974 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की और प्रदूषण को कम करने का प्रयास शुरू किया गया।
- 1976 में एक नई नीति बनायी गयी जिसके अनुसार प्रत्येक राज्य का कर्तव्य है कि वो पर्यावरण को संतुलित बनाये रखे और उसे सुधारे तथा देश के वनों एवं वन्य प्राणियों की रक्षा करें। सभी नागरिक पर्यावरण की रक्षा करें तथा सभी जीवधारियों के प्रति दयालु रहें।
- सन् 1980 में भारत सरकार ने स्वतंत्र पर्यावरण विभाग की स्थापना की। पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति आवश्यक नियम व कानून बनाये गये।
- सन् 1985 में पर्यावरण वन और वन्य जीव मंत्रालय का गठन किया गया और पर्यावरण के साथ–साथ वन्य जीव–जन्तुओं की सुरक्षा को भी बढ़ावा दिया गया।
- सन् 1986 में पर्यावरण सरंक्षण के महत्व को समझते हुए व इसे बढ़ावा देते हुए पर्यावरण (सरंक्षण) अधिनियम बनाया गया जिसका उद्देश्य विभिन्न प्रकार के विद्यमान प्रदूषणों से पर्यावरण को संरक्षित करना है।
- 1995 में वाइल्ड लाइफ प्रोटेक्शन एक्ट लाया गया जिसका उद्देश्य वन्य जीव–जन्तुओं को सुरक्षित करना है।
- 2002 में जैव–विविधता अधिनियम पारित किया गया। जिससे पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने में मदद मिले।
- 2004 में राष्ट्रीय पर्यावरण नीति बनाई गई, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण को संरक्षित करना व जागरूकता फैलाना था।
- वन अधिकार अधिनियम, 2006 इत्यादि विभिन्न प्रकार की नीतियाँ व कानून बनाए गए जिससे कि पर्यावरण को संरक्षण दिया जा सके और पर्यावरण को संतुलित व प्रदूषण रहित बनाया जाये ताकि मानव जीवन सुचारू रूप से चलता रहे।

पिछले वर्षों में पर्यावरण संरक्षण हेतु सरकार द्वारा किये गये प्रयास :

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MOEFC) ने पर्यावरण संरक्षण

अधिनियम में तीसरा संसोधन नियम 5 जून 2023 में पेश किया जो कि 5 जून 2023 में लागू हुआ।

- संशोधन का उद्देश्य पर्यावरण प्रदूषण कम करना और CPC उद्योग के अन्तर्गत टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देना है।
- 2023 में सरकार ने वन संरक्षण संशोधन विधेयक 2023 को पारित किया जिसका उद्देश्य दर्ज वन भूमि, निजी वन भूमि, वृक्षारोपण आदि के अनुप्रयोग को सुव्यवस्थित करना है।
- 2024 में सरकार ने जल प्रदूषण निवारण और नियंत्रण अधिनियम में संशोधन अधिनियम, 2024 को मंजूरी दी है।
- प्रस्तुत विधेयक का उद्देश्य जल प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण और पानी की संपूर्णता को बनाए रखना।
- पर्यावरण को संरक्षित करने के उद्देश्य से निम्न प्रयास किये गये – स्वच्छ भारत मिशन, राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन, कचरा से कंचन मिशन, मिट्टी बचाओ आंदोलन, कैच द रैन मिशन, हाइड्रोजन मिशन, नमामि गंगे अभियान इत्यादि मिशन के जरिये सरकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता अभियान चला रही है व पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने का प्रयास किया जा रहा है।

पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक आम आदमी एक युवा की जिम्मेदारी :

- पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए एक आम आदमी एक युवा को अपने स्तर से पर्यावरण के प्रति जागरूक व सचेत होने की जरूरत है।
- एक आम आदमी को पर्यावरण को स्वच्छ रखना अपना प्रथम व मौलिक कर्तव्य मानना चाहिए और उसके संरक्षण व स्वच्छता के लिए स्वंय सेवा करने की भी जरूरत है।
- जिस प्रकार बूँद–बूँद से घड़ा भरता है ठीक उसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण के प्रति हर एक आदमी को अपनी भागीदारी निभाने की जरूरत है। केवल सरकारी प्रयास, नीति व नियम और योजनाओं से ही नहीं बल्कि आम नागरिक के जागरूकता व प्रयास से पर्यावरण को संरक्षित करने में मदद व सफलता मिलेगी।
- वाहनों से निकलने वाला धुआँ पर्यावरण को बहुत प्रदूषित करता है, इसलिए निजी वाहनों का प्रयोग कम से कम करके सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति हर व्यक्ति की एक अहम भूमिका है, पेड़ों को कटने से रोका जाए व अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।
- बिजली, पानी और गैस इत्यादि का कम उपयोग करके भी एक आम नागरिक अपने–अपने स्तर से पर्यावरण के संरक्षण में अपनी भूमिका निभा सकता है।

- जहाँ वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण का प्रयास हो रहा है एक आम नागरिक को अपने स्थानीय स्तर से इसमें पूरा सहयोग देना चाहिए और पर्यावरण संरक्षण के प्रति अन्य लोगों को भी जागरूक करना चाहिए।
- प्रत्येक नागरिक को अपने प्रतिदिन के जीवन–शैली में प्लास्टिक का कम से कम या ना के बराबर ही प्रयोग करें ताकि पर्यावरण को संरक्षण प्रदान किया जा सके और प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को रोका जा सके।
- दैनिक जीवन में घर से निकलने वाले कूड़ा–करकट अपशिष्ट पदार्थो का उचित–निपटारा किया जाना चाहिए। एक आम आदमी को अपने आस–पास के माहौल को स्वच्छ बनाये रखना चाहिए और अपशिष्ट पदार्थों व कूड़ा करकट का उचित प्रबंध किया जाए, ऐसे ही कहीं पर कचरा न फेंका जाए।
- जहाँ तक संभव हो जैविक खेती की तरफ अग्रसर हों, कम से कम उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की अहम जिम्मेदारी है मानव व पर्यावरण दोनों परस्पर एक–दूसरे के पूरक हैं। अतः हर एक मनुष्य को अपने घर के आगे व आस–पास पौधे अवश्य लगाने चाहिए।

निष्कर्षः

निष्कर्षतया कहा जा सकता है कि पर्यावरण का संरक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है इसके संरक्षण के बिना जीवन यापन करना अत्यन्त कष्टदायी होगा। सरकार पर्यावरण संरक्षण को लेकर बहुत सारे कार्यक्रम, मिशन, नीतियाँ इत्यादि चला रही है। प्रत्येक भारतीय नागरिक का यह प्रथम व मौलिक कर्तव्य होना चाहिए कि वो पर्यावरण के प्रति अपनी भूमिका निभाएँ व इसे स्वच्छ व सुरक्षित रखे। पर्यावरण संरक्षित नही होगा तो विभिन्न प्रकार की भयंकर बीमारियों का सामना करना पड़ सकता है। वायु, जल और भूमि मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है इनके बिना जीवन संभव नहीं। पर्यावरण संरक्षण से वायु, जल व भूमि के प्रदूषण को कम किया जा सकता है। सभी के सतत विकास व स्वस्थ और संरक्षित जीवन के लिए पर्यावरण का संरक्षण बहुत आवश्यक है।

शोध पद्धति

इस पेपर को लिखने के लिए वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसमें इंटरनेट, वेबसाइट्स, किताबों का अध्ययन किया गया है।

संदर्भः

1. भूगोल (साहित्य भवन पब्लिकेशन) : डॉ0 चतुर्भुज मामोरिया, डॉ0 रतन जोशी
2. indiaenviromentalportal.org.in
3. Jagran.com
4. https://hi.vikaspedia.in/rural-energy

5. leverageedu.com
6. https://hindi.indiawaterportal.org/articles
7. mospi.gov.in
8. sarthak.com
9. from.patrika.com
10. pib.gov.in